कमलेश्वर की कहानियों में आधुनिकता व परंपरा का द्वन्द्व

साहित्य हो या समाज वह न तो पूरी तरह से आधुनिक होता है न पूरी तरह से पुरातन या परंपरावादी बल्कि उसकी गति इन दोनों के बीच की गति होती है। जिसमे कहीं आधुनिकता का रंग गाढ़ा होता है तो कहीं परंपरा का। पर यह दो ध्रुवान्त से प्रतीत होने वाले विचार साहित्य हो या समाज दोनों जगह ये चलते साथ-साथ है। इसलिए कहा जाता है कि कोई भी समाज न तो पूरी तरह से आधुनिक होता है और न ही पूरी तरह से परंपरागत। क्योंकि नए विचारों का उदय हर समय व हर समाज में होता आया है। और यही किसी समय के नए विचार जब समाज में बहुत लंबे समय से हमारे जीवन में पीढ़ी-दर-पीढ़ी व्यवहृत होते चले आते है तो वे परंपरा के रूप में स्वीकृत हो जाते है। यानि परंपरा आधुनिकता से भिन्न नहीं हैं। बल्कि आधुनिकता परंपरा का प्रथम चरण है। किसी समय की आधुनिकता ही समाज मे जब पीढ़ी-दर-पीढ़ी व्यवहृत होती रहती है तो वही एक दिन परंपरा का रूप ले लेती है। और उनके ही समक्ष उनकी ही परंपरा में समसामयिक विचार आधुनिक कहलाते है। तो यह आधुनिकता व परंपरा एक तरह से नयें व पुराने विचारों का ही रूप है। यानि जो नयें विचार है वह आधुनिकता और जो पुराने विचार बहुत लंबे समय से समाज में व्यवहृत होते चले आ रहे है वही एक दिन परंपरा का रूप धारण कर लेते है। या परंपरा बन जाते है।

आधुनिकता या परंपरा इन दोनों मे सापेक्षता का सिद्धांत काम करता है। यानि आधुनिकता व परंपरा एक दूसरे के पूरक है। दोनों साथ-साथ चलने वाले है। आधुनिकता के संदर्भ में परंपरा व परंपरा के संदर्भ में आधुनिकता की चर्चा हमारे यहाँ खूब की जाती रही है। आधुनिकता यदि परंपरा की पहली कड़ी है तो परंपरा आधुनिकता की दूसरी कड़ी है। इनका संबंध एक दूसरे से वैसे ही है जैसे दिन और रात का। दिन और रात भिन्न-भिन्न होते हुए भी एक दूसरे के पूरक है। ठीक उसी तरह से आधुनिकता व परंपरा परस्पर विरोधी प्रतीत होते हुए भी एक दूसरे के संपूरक है। जिसमे

आधुनिकता के अपने प्रतिमान है और परंपरा के अपने प्रतिमान है। दोनों अपने प्रतिमानों के अनुकूल चलने में विश्वास रखते है। और यहीं हम समाज में देखते है कि कहीं हमारा समाज बहुत प्रगतिशील व आधुनिक सा दिखता है तो कहीं बहुत पुरातन व परंपरा में बधा हुआ। यानि समाज में एक वैचारिक द्वन्द्व है जिसे हम आधुनिकता व परंपरा का द्वन्द्व कहते है। और इन्ही के सहारे समाज आगे बढ़ता चलता है। यह समाज के दो पहियें है। जिसमे दोनों देखने में अलग है पर है दोनों एक साथ। दोनों चलते एक साथ है। और यह एक-दूसरे के इतने संबद्ध है कि एक की अनुपस्थिति में दूसरा अपना अर्थ खो देता है। और एक साथ होते हुए अपना-अपना अर्थ खोज लेते है।

किसी व्यक्ति व समाज में द्वन्द्व तब अधिक होता है जब वैचारिक रूप से उसका निर्माण हो रहा हो, अपना वैचारिक आधार तैयार कर रहा हो। यानि निर्माणरत व्यक्ति व समाज में द्वन्द्व अधिक होता है। कारण कि उसके पास दो भिन्न विचार होते है। एक परंपरा का दूसरा तत्कालीन समय व समाज का। विचारों कि यह संरचना किसी न किसी समय अपने समाज को झकझोरती जरूर है। कमलेश्वर जिस समय साहित्य लेखन में प्रवृत्त होते है। यह समय भारतीय समाज व व्यक्ति के गहरे उपापोह का समय है। वैचारिक व भौतिक दोनों रूप से भारत प्रगति, विकास के रास्ते पर तेजी से दौड़ने की इच्छा लिए हुए है। जिसमे हर व्यक्ति में यह इच्छा है कि वह जल्दी से जल्दी वह सब कुछ हासिल कर ले जो वह दुनियाँ के अन्य हिस्सों मे देख रहा है। या जो वह चाह रहा है। कमलेश्वर के समय में समाज को इसकी चाह बड़ी गहरी है। और इस चाह के परिणाम स्वरूप ही भारत की समाज व्यवस्था, उसकी वैचारिकी आदि सब में परिवर्तन की आहट होती है। और इस आहट के चपेट में समाज के सर्वप्रथम इकाई परिवार सबसे पहले आती है। जिसके चलते होता यह है कि परिवार का आकर छोटा होने लागता है। हम संयुक्त परिवार से एकाकी परिवार की तरफ भागने लगते है, हम गाँव से शहर की तरफ भागने लगते है, हम भौतिकता की तरह

भागने लगते है, हम व्यक्तिगत होने लगते है, हम रिश्तों को अब पहले की तरह नहीं बल्कि अब अपने हिसाब से देखने लगते है और जरूरत हमसूस होने पर संबंध विच्छेद करने लगते है, हम रिश्तों की पवित्रता को खोने लगते है। शादी के उपरांत भी हम प्रेमी-प्रेमीका के रिश्ते विकसित करने है। यह सब उस वैचारिक संक्रमण के कारण हुआ जिसे हम आधुनिकता कहते है। यह सब आधुनिकता में हमे देखने को मिलता है। और एक तरफ इसी के समान दूसरी धारा है जिसे हम परंपरा की धारा कहते है। वह अपने पुराने प्रतिमानों, पुराने विचारों, पुरानी मान्यताओं के छाया में ही खुद को रखते आया या रखने की कोशिश की। आधुनिक या आधुनिकता के विचारों पर चलने वाले आधुनिक पंथियों ने पुरातनियों को पिछड़ा हुआ या पुराने जमाने का कहकर उपहास किया करते है। और पुरातन वाले भी आधुनिक वालों को पथभ्रष्टक, कुमार्गी अप-संस्कृति पोषक आदि कहकर कोशते है। किन्तु दृश्य यह है कि दोनों एक साथ रहते है एक ही समाज मे रहते है और इसी द्वन्द्व के साथ रहते है। समाज में यह द्वन्द्व आज भी है और यह आगे भी किसी न किसी रूप में बना रहेगा। यह वैचारिकी की बात है। और जब तक समाज है तब तक उसमे वैचारिक भिन्नता अवश्य बनी रहेगी। क्योंकि यह समाज का स्वभाव है। मनुष्य की उपस्थिति वैचारिक भिन्नता का प्रमुख कारण है। तब तक उसमे द्वन्द्व बना रहेगा।

समाज एक निरंतर गतिशील संस्था है। जिसमे समय एवं परिस्थतियों के अनुसार परिवर्तन होता रहता है। उसमें विचारों की प्रासंगिकता-अप्रासंगिकता चलती रहती है। लेकिन मनुष्य की दृष्टि हमेशा उपयोगिता पर होती है। वह सार्थक चीजों को अपनाने तथा निरर्थकता को त्यागने में पूर्ण विश्वास करता है। इसलिए आज का हमारा समाज आधुनिकता व परंपरा के फेर में न पड़ कर बल्कि जो जीवन संगत हैं, जो सार्थक है उसे अपनाने पर जोर देता है फिर वह चाहे आधुनिक हो या परंपरागत हो। समाज का जोर सार्थकता पर है। आदर्श व यथार्थ अपनी जगह है और सार्थकता

अपनी जगह। तो एक स्तर पर समाज के लिए यह दोनों में से वही मायने रखता है जो सार्थक है।

कमलेश्वर प्रगतिशील चेतना के लेखक है। उनके भी विचार यही थे कि जो जीवन सापेक्ष हो, जो सार्थक हो उसका सम्मान होना चाहिए। यही जीवन की मांग है। यह समय की मांग है। हालाकि यह इतना आसान नहीं था कि जो पीढ़ियों से चला आ रहा है उसे एक पल में ढहा दिया जाए और उसके जगह पर एक नया निर्माण कर ले। क्योंकि यह पीढ़ियों का मामला है। नये विचारों, नई सामाजिक संरचना और नई परिस्थितियों की बात है। उभर कर आते हुए आर्थिक संबंधों की बात है। प्रेम जैसा भाऊक, संवेदनशील विषय भी अब आर्थिक संबंधों में तब्दील होता हुआ नजर आता है। पति-पत्नी के रिश्ते आर्थिक दबाव के चलते टूट रहे है। और लगभग हर रिश्ते का समीकरण आर्थिक होता जा रहा है। इमोशन व आर्थिक दबाव आज का लगभग हर रिश्ता महसूस करता है। इसका भी द्वन्द्व है। दबाव है।

आधुनिकता व परंपरा दोनों जीवन मूल्य है। पर दोनों की अपनी प्रकृति व प्रवृति अलग-अलग है। दोनों की अपनी सीमाएं व संभावनाएं है। आधुनिकता व परंपरा जीवन के कोई शाश्वत मूल्य नही है बल्कि ये मनुष्य जीवन के विकास के साथ निरंतर विकसित होते जीवन के दो भिन्न- भिन्न दृष्टिकोण है। इसी दृष्टिकोण की भिन्नता के कारण आधुनिकता व परंपरा में कई बार हमें द्वन्द्व या अंतर्विरोध दिखाई देता है। जिस कारण इनकी दो भिन्न-भिन्न विचारों के रूप में चर्चा की जाती रही हैं। आधुनिकता में जहाँ नयेपन का एहसास या बोध होता है वही परंपरा में प्राचीनता या पुरानेपन की चर्चा की जाती रही है। आधुनिकता व परंपरा को हम दो पीढ़ियों की मानसिक संरचना का अलगाव भी कह सकते है। यही कारण है कि कई बार व्यक्ति या समाज आधुनिकता के नाम पर व्यक्ति या समाज का विरोध करता है, तो कई बार उसका समर्थन। ठीक इसी तरह से परंपरा के साथ होता है। कई बार व्यक्ति या समाज उसको जीवन का हिस्सा मानकर उसकी सार्थकता

को महसूस करते हुए उसे स्वीकार करता है तो कई बार निरर्थक व सारहीन महसूस होने पर उनका विरोध भी करता है। तो यह समर्थन या विरोध या विरोध व समर्थन का पक्ष प्रतिपक्ष आधुनिकता व परंपरा दोनों के साथ हैं। पर दोनों जीवन मूल्य के रूप मे स्थापित दो सिद्धांत की तरह है। दो भिन्न दृष्टिकोणों के साथ। और दोनों का प्रयोग मनुष्य या समाज अपने सुविधा, अपने विचारों के अनुकूलता के अनुरूप ही करता है। इस प्रकार आधुनिकता व परंपरा दो भिन्न दृष्टिकोणों वाला जीवन दर्शन है। पुरातनता व नवता समाज का एक स्वाभाविक धर्म है। आज जो आधुनिक है, कल वह भी समय की धुरी में पुराना पड़कर परंपरा का हिस्सा हो जाएगा। और आज जो सार्थक है कल वह भी मूल्यहीन हो सकता है। वह भी अपना अर्थ खो सकता है। फिर वह भी परंपरा के अंतर्गत एक अनुपयोगी परंपरा मानकर अस्वीकार कर दिया जाए। या कि वह आनेवाले कालचक्र में और अधिक मूल्यवान भी हो सकता है और समाज उसे और शिद्दत से भी स्वीकार कर सकता है। इसी तरह परंपराओं में बहुत कुछ सार्थक होता है तो कुछ निरर्थक भी होता है। सब कुछ सार्थक ही सार्थक या सब कुछ निरर्थक ही निरर्थक नही होता। जो कुछ इसमे सार्थक, सत्य व महत्त्वपूर्ण है, वह समाज व व्यक्ति के लिए उपयोगी है। वह प्रयोग में लाया जाता रहेगा, व्यक्ति व समाज उसे अपनाता रहेगा। यह एक गतिशील जीवंत समाज के लक्षण भी हैं कि जो कुछ भी कालचक्र में विगलित हो चुका है उसे अस्वीकार कर दे और जो कुछ भी दुर्दम कालचक्र में जीवन को सार्थकता प्रदान करे उसे सहजता से स्वीकार कर ले। कुल मिलाकर यह है कि जो व्यक्ति व समाज के लिए किसी भी कालखंड में उसमें एक अर्थ जोड़ेगा, उसको महत्त्वपूर्ण बनायेगा, उसके जीवन के अनुकूल, तर्कसंगत, वैज्ञानिक होगा और अपना अर्थ रखेगा वह स्वीकार्य होता रहेगा और जो अर्थ खो देगा वह त्याज्य हो जाएगा, अस्वीकार्य कर दिया जाएगा। वह चाहे आधुनिकता हो या कि परंपरा। और यही स्वीकारोक्ति या त्याज्य का प्रश्न आधुनिकता व परंपरा के समक्ष बड़ा प्रश्न है।

भारतीय समाज बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के समय से तेज गति से बदलता हुआ समाज है। भारतीय समाज में यदि हम आधुनिकता की बात कर रहे है तो इस समय को रेखांकित करना अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि की यह वह समय है जब भारतीय समाज अधिकार संपन्न होता है, हमारे हाथ में लोकतंत्र आता है, अपनी सरकार बनती है, पक्ष व प्रतिपक्ष है, सभी तरह की स्थितियों-परिस्थितियों पर संसदीय बहस है। और इसके साथ ही अस्मितमूलक बहसों व विमर्शों का उदय होता है। आधुनिकता के प्रभाव यहा से ज्यादा मुखर हो कर सामने आता है। यहाँ से भारतीय समाज आधुनिक तर्कों के साथ गहरा जुड़ाव महसूस करता है। और यहा से द्वन्द्व की क्रिया भी सघन होती चलती है।

आधुनिकता व परंपरा को लेकर भारतीय मानस लगभग दो तरह से सोचता विचारता है। एक तो यह कि वह अब आधुनिक पैमानों पर जीवन को जीना चाहता है। और उसकी शर्तों को वह स्वीकार भी करता है। आज दुनिया के आधुनिकतम सुख सुविधायों को पाना चाहता है और स्वीकार भी कर लेता है या कई बार थोड़ी मीनमेख के साथ स्वीकार करता है। और यह आज समय की जरूरत और स्वीकारने की शर्त लगभग अनिवार्य भी हो चुकी है। किन्तु जीवन मूल्यों के साथ वह समझौता नही कर पाता है। उसमे वह ठस से मस नही होना चाहता है। वह सब कुछ वैसा ही चाहता है जैसा की दादा बाबा करते आए थे जो की अब संभव नही है। जैसे कि स्त्रियों के विषय में भारतीय मानस आज भी लगभग वैसा ही सोचता है, और चाहता है, जैसा कि होता आया था किन्तु अब वह संभव नही है। वैसे इस बदलाव को समाज स्वीकार्यता है किन्तु आलोचना के साथ। तो आधुनिकता नये तकनीक, नये उपकरणों, नये संसाधनों, नये विचारों के साथ बदलता हुआ नया जीवन मूल्य है, नया जीवन दर्शन है। जिसे कभी सहजता तो कभी असहजता के साथ लगभग सब स्वीकार कर रहे है। भारत में इसे गति प्रदान करने में भारत के साथ विदेश से संपर्क की महत्तवपूर्ण भूमिका रही है। जिस भूभाग से विदेशी संपर्क ज्यादा है वहाँ पर इसके प्रभाव भी अधिक

है। वहाँ आधुनिकीकरण की गति तेज है। आधुनिकता की तरफ झुकाव अधिक है। फिर भी वहाँ आधुनिकता व परंपरा को साधने की कोशिश रहती है।

आधुनिकता एक वैश्विक दृष्टि भी है। जो सम्पूर्ण संसार को एक साथ एक जीवन शैली एक जीवन दृष्टि से सबको प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जोड़ रही है। किन्तु परंपराए हमारी सभ्यता व संस्कृति की जीवन दृष्टि है। परंपराएं किसी खास समाज की भी हो सकती है। एक सभ्यता-संस्कृति की भी हो सकती है। और एक संस्कृति में अलग-अलग समाज की परंपराए हो सकती है। परंपराओं में भौगोलिकता का भास होता है। वे अपने सभ्यता-संस्कृति व समाज की प्रतिनिधित्व करती है। उसमे स्थानीयता का बोध होता है। जैसे भारतीय समाज में अलग-अलग भागों में व अलग-अलग समाजों की अपनी कुछ रीति-रिवाज व परंपराए होती है। जो कि हर किसी का अपना महत्त्व है। किन्तु आधुनिकता में इस प्रकार का कहीं कोई जीवन मूल्य अलग-अलग नहीं मिलेगा। उसका रूप हर जगह एक जैसा ही है। उसमे कोई अंतर नहीं है। जिसका कारण है वैज्ञानिक निष्कर्षो की समरूपता। इस प्रकार से यदि हम आधुनिकता व परंपरा के संदर्भ में आधुनिकता को विश्लेषित करते हुए कहना चाहे तो कह सकते है कि आधुनिकता विश्व की संस्कृतियों, परंपराओं पर एक तरह का आक्रमण है। जो कुछ समय बाद लगभग सबको खत्म कर खुद ही राज करेगी। यह पाश्चात्य जीवन दृष्टि का प्रसार व उसका विस्तार है। यही कारण है कि अन्य संस्कृतियों पर इसका प्रभाव एक आततायी का प्रभाव है। जो उनको नष्ट कर रही है। जैसे भारतीय समाज में मूल्यों का हास वह चाहे सामाजिक हो, धार्मिक हो, सांस्कृतिक हो, या पारिवारिक हो सब पर यह आक्रामक तेवर के साथ आक्रमण किया है। और हर जगह इसका व्यापक प्रभाव दृष्टिगोचर हो रहे है।

हिन्दी साहित्य के माध्यम से यदि हम आधुनिकता की बात करे तो भारतेन्दु युग में हम उन अर्थों में आधुनिक नही हुए थे जिन अर्थों में आज है। भारतेन्दु युग की आधुनिकता या नवीनता

में भारतीय समाज के विकास की दिशा में नया दृष्टिकोण है। जिसमे समाज की उन्नति की बात हैं, व्यक्ति की उन्नति की बात हैं, भाषा की उन्नति की बात हैं, जड़ताओं, विषमताओं को खत्म करने की बात है, व्यक्ति, समाज व राष्ट्र के उन्नयन व एकता की बात है। किन्तु वहाँ भारतीय मूल्यों पर संकट उस रूप में नही है जैसा की आज है। वहाँ भारतीय सभ्यता, संस्कृति में पाश्चात्य का संक्रमण नही है। वहाँ समाज की उन्नति के लिए ज्ञान-विज्ञान पर जोर और उसके बाधक तत्त्वों का निषेध है। पर अपनी सभ्यता व संस्कृति का पूर्णपक्ष वहाँ मौजूद रहता है। किन्तु आज की आधुनिकता एकदम भिन्न किस्म की आधुनिकता है, जहाँ हम आधुनिक सुख-सुविधाओं से तो परिपूर्ण हो रहे है किन्तु सामाजिक व सांस्कृतिक रूप से हम उतने ही क्षीण होते जा रहे हैं। जर्जर होते जा रहे है। हम अपने ही मूल्यों से मूल्यहीन होते जा रहे है। यही कारण है की हम अपने जीवन में सुख-सुविधाओं को तो बढ़ा लिए है किन्तु अकेलेपन, अजनवीयत, संत्रास आदि के शिकार हो गये है। हमारी आत्मीयता दिन पर दिन खत्म होती जा रही है। हम यंत्रों मे तब्दील होते जा रहे है। यह आधुनिकता का संकट भी है। यह आधुनिकता का दबाव है। आधुनिकता के नए-नए मूल्यों में सामाजिक ढ़ाचा नवीन रूप ले लिया है।

भारत कृषि प्रधान देश हैं। जहाँ गाँवों में आर्थिक समृद्धि बहुत अच्छी कभी नही होती हा किसी की बहुत अच्छी होने पर भी सामान्य स्थिति ही होती है। और जीवन को एक संघर्ष की तरह जीते है। लेकिन अकेलापन, अजनवीयत आदि के लोग शिकार नही होते तथा आर्थिक तंगी से परिवार यानि पति-पत्नी में संबंध विच्छेद नही होते थे। जिंदगी के सुख दुख को सब साथ मिलकर जीते थे। किन्तु इस आधुनिकीकरण की खुशबू वहाँ भी फैली और लोग अब वहाँ भी इन सबके शिकार हो रहे है। वहाँ भी अब संबंध विच्छेद हो रहे है। भारतीय जीवन में ब्याह की अवधारणा समझौता नहीं है, दो लोगों का अपनी सुविधा के अनुसार जीवन बिताने का माध्यम भी नही है। वह जन्मों जन्मांतर के संबंध के रूप में है, एक जिम्मेवारी के रूप में है, एक भावनात्मक संबंध है। और दो

लोगों के एक जीवन जीने का एकीकरण है। किन्तु अब इसकी अवधारणा भी बदल चुकी है। अब संबंधों का टूटना एक सामान्य सी बात हो गई है। जिसके मूल में अलग-अलग कारण है, किन्तु दृष्टि पाश्चात्य की है इसमें भी। मैं पाश्चात्य का जिक्र यहाँ इसलिए कर रहा हूँ, क्यों कि हमारे यहाँ इस प्रकार के दृष्टिकोण आयातित दृष्टिकोण है, जो पाश्चात्य की देन है।

आधुनिकीकरण में हम निश्चित ही आर्थिक रूप से, भौतिक रूप से समृद्धि हुए है। किन्तु हम भावनात्मक रूप से कमजोर हुए है। भावनात्मक रूप से हम अकेले हुए है। यह सब इसलिए भी हो पा रहा है क्योंकि आधुनिकता आज का जीवन मूल्य बन गयी हैं। जीवन शैली बन गयी है। भारतीय समाज में आधुनिकता व परंपरा के विचार व व्यवहार को लेकर दो पीढ़ियों में परस्पर तनाव बना ही रहता है। नयी पीढ़ी हर चीज को एक झटके में बदलने की कोशिश करती है तो पुरानी पीढ़ी ठहराव के साथ सामाजिक स्वीकृति के साथ चीजों को बदलना चाहती है। इस प्रकार यदि हम कहना चाहे तो कह सकते है कि आधुनिकता निरंतर बदलती हुई अवधारणा, नये विचारों, नयी चीजों के साथ चलने वाली क्रिया है, तो परंपरा सदियों से चली आती हुई रीति-रिवाज, मूल्य, आदर्श, मान्यताओं व आचार-विचारों की एक शृखल है। जिसे हम एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांन्तरित करते रहते है।

आधुनिकता हर हाल में अच्छी ही हो यह कहना बड़ा कठिन है। और इसी तरह परंपरा हर हाल में एक बंधन ही हो यह कहना भी उतना ही कठिन है, जितना की आधुनिकता को हर हाल में ठीक कहना। आधुनिकता व परंपरा समाज के दो भिन्न से लगाने वाले एक दृष्टिकोण है। आधुनिकता व परंपरा का द्वन्द्व समाज, व्यक्ति व समय के बदलते चले जाने का द्वन्द्व है। यह कोई अमूर्त अनाम वस्तु नहीं बल्कि यह समाज व व्यक्ति द्वारा व्यवहृत होने वाले क्रिया-कलाप है। बाह्य रूप से इन दोनों में द्वन्द्व है पर आंतरिक रूप से दोनों दोनों एक है एक स्तर पर यह भी एक द्वन्द्व है।

कहानियों में आधुनिकता का आगमन

हिन्दी साहित्य में आधुनिकता का आरंभ भारतेन्दु युग से होती है। लेकिन सामाजिक व राजनैतिक रूप से इसकी शुरुआत और पहले हो चुकी होती है। जिसमें समाज सुधार आंदोलनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। तो सामाजिक व राजनीतिक रूप से हम आधुनिकता को ग्रहण करना शुरू कर चुके थे। और इसके साथ-साथ भारतेन्दु युग से साहित्य में भी आधुनिक विचार प्रवेश पाते है। पर भारतेन्दु युग में कहानी विधा के लेखन का प्रचलन नहीं हो पाता है। लेकिन भारतेन्दु युग में जो गद्य विधाएं विकसित हुई उन सब पर आधुनिकता का पूर्ण प्रभाव है। भारतेन्दु व उनका मण्डल तो इसमे सबसे अग्रणी था। चूंकि भारतेन्दु युग में गद्य विधाओं का विकास हो चुका है और आधुनिक विचारों का प्रवाह उनमे हो चुका है। तब द्विवेदी युग में एक विधा के तौर पर कहानी का विकास होता है। चूंकि साहित्य में आधुनिकता का पूरा प्रचार हो चुका था। गद्य विधाओं का निर्माण आधुनिक प्रतिमानों पर हो रहा था तो ऐसे में कहानी का विकास ही आधुनिक विचारों के साथ होता है। कहानी अपने जन्म के साथ ही आधुनिक गद्य विधा है। इसकी शुरुआत ही समाज के परिवर्तित होते प्रतिमानों के साथ होती है। समाज जब अपनी करवटे बदल रहा है। वह एक संक्रमण काल में है। उसी समय कहानी समाज के संक्रमण को बयां करते हुए हमारे सामने आती है। इस तरह कहानी की शुरुआत आधुनिक प्रतिमानों के साथ होती है। और कहानी अपने आप में स्वयं एक आधुनिक गद्य विधा है। जिसका अंकुरण आधुनिकता के जमीन पर होता है।

परंपरा के विषय में कमलेश्वर जी का विचार है कि, “जीवन और परंपरागत मूल्यों के प्रति उन पात्रों की असहमति ही मेरी असहमति है।”1 विपिन कुमार अग्रवाल के अनुसार "आधुनिकता की प्रकृति सूक्ष्म हैं। इसकी कोई स्थूल और अपरिवर्तनीय दिशा नही हैं जिसे व्यापक ऐतिहासिक दृष्टि से खोजा जा सके। परमाणु की तरह इसके पास कोई यादगार नही हैं, बल्कि हम कह सकते हैं कि आधुनिकता मूलतः एक खण्डित घटना है, जिसकी बीती हुई घटनाओं से बहुत दूर का ही संबंध

हैं।”2 विद्यानिवास मिश्र "आधुनिकता को मैं एक निरन्तर सजगता मानता हूँ, एक शाश्वत विद्वता मानता हूँ। यह सजगता अपने परिवेश के प्रति होती हैं, समाज द्वारा तय की गई राह के प्रति होती हैं, अपनी क्षमता और अक्षमता के प्रति होती हैं।"3

आधुनिकता की प्रक्रिया जैसे जैसे तेज होती गयी वैसे-वैसे हमारी पुरानी रूढ़ियाँ, स्थिर दृष्टिकोण और मान्यताए मूल्यहीन होती गई है। जैसे-जैसे शहरीकरण, औद्योगिकरण और भौतिकता बढ़ती गयी वैसे-वैसे हमारे पुराने मूल्य, आदर्श, नैतिकता आदि मूल्यहीन लगाने लगे और इनकी जगह एक नई सामाजिक संरचना जन्मी जिसमे नये मूल्य, नये आदर्श, नयी मान्यताये अपनी जगह बनाने लगी। चली आती हुई मान्यताओं, परंपराओं के टूटने की क्रिया और नये निर्मित होते हुए मूल्यों व परम्पराओं की क्रिया के बीच का जो द्वंद्व हैं।

मध्यकालीन चेतना और बोध पूर्णतः पारलौकिक सत्ता में आस्थावान और धर्म-सम्मत हैं। यही कारण है कि मध्यकालीन चिंतन व व्यवहार में आदर्श, नैतिकता, पाप-पुण्य, आचार-विचार, इत्यादि का पालन-पोषण व व्यवहार में आचरण होता रहा। हिंदी कहानियों के आरंभिक कथ्य को यदि हम देखे तो पाते हैं कि वह नैतिकता, आदर्श मूल्यों, परम्पराओं के आस-पास ही अपना स्वरूप बना रही हैं। या इन्हें ही अपने कथ्य का विषय बनाया हैं और उनमें चरित्रों के निर्माण पर ही बल दिया है। इन चरित्रों के निर्माण का सीधा संबंध परम्परागत मान्यताओं से जुड़ जाता हैं। कहने को हम कुछ भी कहे पर स्वभाव से आदमी बड़ा ही स्वार्थी होता है। भारत की सामाजिक संरचना सबसे जटिल संरचना है। और यह परंपराओं में जकड़ी हुई है। इस संरचना को टकराना बहुत कठिन काम है लेकिन आदमी अपने स्वार्थ के लिए आदमी इसे तोड़ा है। शहरों में विवाह का तय करना एक बड़ी समस्या हो चुकी है। तो आदमी अब कई बार जाति नहीं देखता है और शादी करता है। वह अपने स्वभाव में, कर्मकांड में भले ही जाति वादी हो पर शादी के लिए स्वयं को छूट दे देता है।

हिंदी साहित्य से आधुनिकता का संबंध तो भारतेंदु युग मे ही हो जाता हैं किंतु कथा साहित्य का संबंध तब तक परम्पराओं पर ही ज्यादा ठीका था। आधुनिकता का वह प्रभाव या वह रूप नही दिखयी देता जिसे कथा साहित्य में आधुनिकता के तत्त्व मानकर रेखांकित किया।कथा साहित्य में यह तत्त्व में इन तत्त्वों को रेखांकित किया जाने लगा स्वतंत्रता के बाद से। क्यों कि कथा साहित्य के सबसे बड़े पुरोधा मुंशी प्रेमचंद के यहां भी बहुत उठापटक के बाद यथार्थ की अभिव्यक्ति की हैं फिर उनमें परम्परागत बोध बहुत अधिक दिखयी पड़ते हैं और आदर्शो मूल्यों की स्थापना ही दिखयी पड़ती हैं उनसे मोहभंग नही हो पाता है। प्रेमचन्द्रयुगीन कथा की नींव ही आदर्श और नैतिकता की जमीन पर खड़ी हैं। इसी से उनके यहां ऐसे चरित्रों का निर्माण किया जाता हैं जो किसी न किसी आदर्श की स्थापना करना हो। स्वतंत्रतापूर्व का कथा साहित्य अपने संरचना में यथार्थ का स्पर्श करते हुए भी आदर्श, नैतिकता व मूल्यों के अधिक पास है। किंतु स्वतंत्रता के बाद का कथा साहित्य अपना मानस बदल लेता है।

कहानी विकसित होते नयी सामाजिक संरचना व नयें मूल्यों के साथ चलती है। कहानी के विकास प्रक्रिया में यदि हम देखे तो प्रेमचंदपूर्व युग की कहानियों में आधुनिकता का आभास उस रूप में नहीं जैसा प्रेमचंद युग में मिलता है। प्रेमचंद पूर्व युग की आधुनिकता नए विचारीं की आधुनिकता है। लेकिन वहाँ परंपरा पर भी जोर है। प्रेमचंद युग में रूढगत विचारों को कडा झटका लगता है। सामाजिक संरचना, समाज व्यवस्था सब पर प्रश्न चिन्ह लगता है। उसकी संरचना में दोषों को दिखाया जाता है। और नयें विचारों का प्रादुर्भाव होता है। जिसमें प्रेमचंद व प्रसाद महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। प्रेमचंदोंत्तर कहानियों में आधुनिकता के प्रभाव का पूर्ण प्रकाशन होता है। आधुनिकता का हमारे जीवन में किस रूप में प्रभाव आया है। उसका परिणाम क्या है। यह सब प्रेमचंदोंत्तर कहानियों से लेकर वर्तमान काल तक ही कहानियों में लक्षित हो रहा है। आधुनिकता ने सबसे

अधिक हमारे मूल्यों, आचार-व्यवहार को प्रभावित किया है। चीफ की दावत, वापसी, दोपहर का भोजन, दिल्ली में एक मौत आदि कहानियों में हम देख सकते है।

कहानी एक आधुनिक गद्य विधा है। इसका विकास हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में होता है। जिसके फलस्वरूप कहानी में आधुनिकता का समावेश इसके आरंभ में ही हो जाता है। यानि कहानी का आरंभ ही आधुनिक दृष्टिकोण आधुनिक विचारों के साथ होता है। और कहानी के कथ्य भी अन्य गद्य विधाओं की भांति अपने समय, समाज व व्यक्ति से जुड़ा हुआ है। हा इसमे यह हुआ है की समय के साथ जैसे-जैसे बदलाव आया है वैसे-वैसे कहानियों का कथ्य बदलता गया है। जैसे-जैसे समाज की गति बदली है वैसे-वैसे कहानी का अपना रूप स्वरूप बदला है। वैसे-वैसे उसकी चेतना बदली है। और साहित्य में होता यही आया है की वह समय के साथ अपनी गति व अपनी विचारधारा की बदलता रहा है। तो जब समय व समाज में आधुनिकता का आरंभ होता है तो कहानी भी उसे अपना विषय बनती है। उसके चाल-चरित्र को समझती है। इस तरह कहानी आधुनिक थी और लगातार खुद को बदलती रही है।

कमलेश्वर की कहानियों में निरूपित लोकजीवन

कमलेश्वर जन पक्षधरता के लेखक है। सामान्य जन व सामान्य जीवन उनकी लेखनी से नयी उचाइयों को पाता है। उनके लेखन में प्रतिबद्धता सर्वोपरि है। कमलेश्वर लोक जीवन के उतने करीब नहीं हो पाते है जीतने की आंचलिक साहित्यकार होते है। इस दूरी की वजह से कमलेश्वर में लोक जीवन की वह गंध, वह खुशबू, वह तासीर, उसकी जीवतता, उसकी जटिलता नहीं आ पाती है जो रेणु, शिव प्रसाद सिंह, शिव मूर्ति आदि की कहानियों में दिखलाई पड़ता है। लेकिन फिर भी कमलेश्वर लोगों के करीब हमेशा रहें। जैसे राजा निरबंसिया, नीली झील, नागमणि, गाय की चोरी, अकाल, रात गुनाह और औरत, गर्मियों के दिन, राजा निरबंसिया, देवा की माँ, दुनियाँ

बहुत बड़ी है, कस्बे का आदमी आदि कहानियों में लोक जीवन की गंध है। उसकी उठा-पटक है। उसकी समस्याए है।

चूंकि कमलेश्वर की कहानियों में कस्बाई व नगर जीवन की पृष्ठभूमि पर अधिकांश कहानियाँ आधारित है। इस लिहाज से जिन जीवन की वे बहुत कहानियाँ नहीं लिखे है। लेकिन उनकी कहानियों में राजा निरबंसिया, देवा की माँ, कस्बे का आदमी, नीली झील, नागमणि, गर्मियों कर दिन, दुनिया बहुत बड़ी है आदि कहानियों में लोक जीवन सुरक्षित है। इन कहानियों की मुख्य समस्या आर्थिक व संवेदनहीनता की है। राजा निरबंसिया का जगपति ग्रामीण परिवेश का एक ऐसा पत्र है जो आर्थिक तंगी के साथ, पति-पत्नी संबंध की संवेदन शून्यता से भी लड़ रहा है। और तमाम कोशिशों के बाद भी वह अंत तक वह न तो आर्थिक तंगी से मुक्त हो पाता है और न ही पत्नी से संवेदनात्मक सहयोग। और अंत में वह अपनी आत्महत्या कर लेता है। देवा की माँ कहानी की बहु मुख्य समस्या आर्थिक व रिश्तों की संवेदनहीनता है। पति द्वारा परित्यक्ता हो के बावजूद भी देवा की माँ अपने पति के प्रति भावनात्मक लगाव रखती है। परित्यक्तता होने के बावजूद भी पति के बीमार पड़ने पर उसके स्वस्थ की कमाना करती है। वही उसका पति उसे किसी तरह का कोई सहयोग नहीं करता है बल्कि उसके संकट के समय में उसे निराश ही करता है। इसी तरह गर्मियों के दिन के वैद्य जी है जो अपने आर्थिक संकटों से जूझ रहे है। जो वैद्यकी के साथ तहसील का भी काम करते है। लोक जीवन कई बार बाजार के नयें-नयें स्वरूप से संकट करता है। तेज गति से हो रहे बदलाव से वह जूझता हुआ स महसूस करता है। वैद्य जी भी जूझ रहे है। साइनबोर्ड की कल्चर से। पर मजबूरी मे बनवाते है लेकिन उनको बहुत लाभ उससे भी नहीं होता है। दुनिया बहुत बड़ी है की पात्र अन्नपूर्णा प्रेमविवाह की है। पति की मौत हो जाती है। और

लोक जीवन की कुछ सामान्य मान्यताए भी कमलेश्वर के कहानियों में हमे दिखाई पड़ती है। जैसे सीखचे कहानी में सेठ की बहु। इस तरह कमलेश्वर की कहानियों में लोकजीवन का विविध रंग

हमें दिखाई पड़ते है लेकिन उसमे सबसे चटक व गढ़ा रंग है आर्थिक विषमता व संवेदनशील बेजुबान होते रिश्तों की विवशता। यह कोई सामान्य बात नहीं है। बल्कि लोकजीवन में इस तरह के बदलाव बहुत बड़े गैप को जन्म दिए है। लोगों की अपनी नजादीकियाँ कम हुई है। लोक जीवन भी अपनेपन के संकट से जूझ रहा है। अपनत्व पर वहाँ भी अब संकट है। कमलेश्वर की चिंता इस पर हमेशा बहुत ज्यादा रही है।

कमलेश्वर की कहानियों में लोक जीवन की जो गंध है वह बदलते हुए लोक जीवन की गंध है। वहाँ ठहर हुआ लोक जीवन नहीं है। या की रेणु या प्रेमचंद की तरह उतनी जटिलता में नहीं है। बल्कि कमलेश्वर की कहानियों का लोक वृत जो बनता है वह लोक से अधिक कस्बाई है। इसलिए उसमे कस्बाई लोक वृत ही बनता है। और उसमें जो जीवन की किरणें फुटकर निकल रही है, वहाँ से जो सामाजिकता निकल रही है वह लोक वृत का भान करा रही है।

कमलेश्वर कहानियों में लोक जीवन की समस्याए

लोक जीवन में कई तरह की समस्याए होती है। जिसमें सबसे बड़ी समस्या सामाजिक होती है। लोक जीवन में मनुष्य के ऊपर समाज का हस्तक्षेप सबसे अधिक होता है। समाज कोई ऐसी दिखाने वाली वस्तु नहीं है। यानि समाज अमूर्त है पर व्यक्ति पर उसका प्रभाव प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में है। समाज कुछ ऐसा विधान बना देता है कि व्यक्ति उससे बाहर नहीं हो पाता है और इसका लोगों के बीच अनावश्यक हस्तक्षेप का डर भय भी होता है। समाज कड़ी से कड़ी सजा का प्राविधान करता है।

अकेलापन

अकेलापन आधुनिकता की एक खास प्रवृति है। आज मनुष्य बाहर के भीड़ के साथ भौतिकता से जितना अधिक घिराता जा रहा है वह अंदर से उतना ही खाली होता जा रहा है। वह अकेला होता

जा रहा है। यह अकेलेपन गाँव से लेकर शहर तक और बुजुर्गों से लेकर नवयुवकों तक सब में व्याप्त है। समय के चक्र में आदमी ऐसे उलझते गया कि वह अपने घर परिवार में भी खुद को अकेला महसूस करने लगा। अपने आप को अजनवी महसूस करने लगा। नंगा आदमी कहानी का रवि शहर में रहते हुए अकेलेपन, अजनवीयत से ऊब गया है। और वह शहर में रहते हुए बार-बार अपने छोटे से कस्बे, शहर में जाने के लिए तड़प उठता है। और वह कहता है कि इस शहर से अच्छा तो अपना कस्बा ही है। जहां लोग उसे जानते है। वह कहता है कि "कभी-कभी माँ भर आता है, जी होता है अभी उड़कर अपने उस छोटे से शहर में पहुँच जाए, जहां लोग उसे पहचानते है।"4

आत्मा की आवाज कहानी में परंपरा की पुकार ज्यादा है। आधुनिकता की आहट बहुत ही दबे या सकुचाते भाव से दिखाई पड़ती है। स्त्रियाँ शादी के बाद भी अपने प्रेमी को खत लिखती है, उसे याद करती है। और सब कुछ ठीक है। इसका अनुमोदन भी करती है। कहानी को पढ़कर लगता है कि लेखन ने परंपरा पर आधुनिकता की परत तो चढ़ता है। पर परंपरा की जमी हुयी जड़ी को वह उखाड़कर फेंक नहीं पाता है। पहले विवाह के बाद कोई भी स्त्री हर हाल में हर सुख दुख सहकर घर में ही रह जाती थी पर अब ऐसा नहीं है। शादी के बाद स्त्रियाँ उस घर से अलग अपना कोई अस्तित्व नहीं मानती थी पर अब ऐसा नहीं है। आत्मा की आवाज में गोपाल की पत्नी कहती है "इसमें कोई अजीब बात भी नहीं, हर जगह जंजीरे भी हैं और सतीत्व की आडंबरपूर्ण दीवारें भी। पर जंजीर की हर कड़ी में जोड़ की दरार है और हर दीवार में सधें भी।...मैं यहाँ बहुत सुखी हूँ। सारे आराम यहाँ हैं। मेरी माँ और पापा का अरमान की उनकी इकलौती लड़की का रिश्ता किसी ऊंचे घर में हो, पुरा हो ही गया है, इससे भी मुझे बहुत संतोष मिलता है।"5 एक तरफ वह शादी को बंधन बता रही है तो दूसरी तरफ उसे माँ-बाप के लिए किया हुआ जैसा समझौता हो। यह द्वन्द्व आज का बड़ा द्वन्द्व है।

अधूरी कहानी में लेखक ने एक प्रेम कथा को अपने कथ्य का आधार बनाया है। प्रेम समाज का शाश्वत सत्य है। लेकिन यह प्रेम भी छल-कपट, आरोप-प्रत्यरोप से अपना दामन बचा नहीं पाया है। इस पवित्र भावना में भी इंसान अपने स्वार्थ की महक को बिखेर दिया है। प्रेम करना इंसान के लिए बहुत आसान लगता है, लेकिन उसे निभाना बहुत कठिन होता है। इंसान प्रेम की भावना मे आकार प्रेम करने तो लगता है लेकिन कभी इंसान उसे इतना घृणित कर देता है की आदमी को प्रेम से घृणा हो जाती है। यह प्रेम जैसे पवित्र भावना की हत्या है। अधूरी कहानी एक प्रोफेसर व एक छात्रा की कहानी है। कहानी प्रेम की है। इस प्रेम की भावना को भारतीय व्यक्ति व्यक्तिगत तौर पर भले ही इसे व्यक्त करता हो लेकिन भारतीय समाज अभी भी इसकी अनुमति नहीं देता है। और कोई कितना की अपने आप में आधुनक या प्रगतिशील क्यों न हो जाए लेकिन अभी उसके लिए समाज की मर्यादाए लघना संभव नहीं हो सका है। यह भारतीय समाज में नयी व पुरानी पीढ़ी के मध्य व आधुनिक विचारों व परंपरावादी विचारों के मध्य इस बात की लेकर एक गहरा द्वन्द्व है।

कमलेश्वर की कहानियों की समीक्षा करते हुए माधुरी शाह जी कहती है कि “नयी कहानी इसलिए आधुनिकता बोध के संक्रमण की कहानी है। पारंपरिक मूल्य विघटन की तेज प्रक्रिया में नयें मानवीय संबंधों की तलाश नयी कहानी का मुख्य सरोकार है।”6 कमलेश्वर अपने प्रारम्भिक कहानियों में परंपरा के प्रति ज्यादा उदार है। जैसे प्रेमचंद कभी हुआ करते थे। लेकिन वे भी अपनी परंपराओं पर ज्यादा ठीक नहीं पाते है। और बाद में वे भी यथार्थ को ही लिखा। कमलेश्वर की प्रारम्भिक कहानियों में राजा निरबंसिया, पानी की तस्वीर, गाय की चोरी, कस्बे का आदमी देवा की माँ आदि कहानियों में आधुनिकता की आहट तो है लेकिन वह परिणाम में नहीं बदल पाती है। इन कहानियों में मानवातावादी मूल्यों और आदर्शों की स्थापना का आग्रह है। इन कहानियों में अंत तक आते-आते कमलेश्वर किसी न किसी आदर्श की स्थापना कर ही जाते है। और जीवन के

महान मूल्यों के प्रति लेखक की आस्था है। परंपरागत पत्नी रूप, त्याग की भावना, धर्म में आस्था, लोक-परलोक की चिंता, आदि बातें कमलेश्वर करते है। पर इन कहानियों में कहीं हल्की सी आधुनिकता की आहट है बस।

कमलेश्वर अपने कहानियों में बार-बार यह दिखाने की कोशिश की है कि मूलतः यह युग अर्थ प्रधान युग है। आधुनिकता हो या परंपरा वह अर्थ के हिसाब से चालित है। आधुनिकता व परंपरा पर अंकुश अर्थ का ही। होता यह है कि जहां आधुनिकतावाद में जीवन मूल्यों पर भारी पड़ रहा था वही आर्थिक संकट में उस और अधिक मदद की। इस परिवर्तित बोध से बिखराव, अनिश्चय और अराजकता का निर्माण होता है। जिसके चलते सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक सभी संबंध अपना परंपरागत अर्थ खो रहे थे। नौकरी पेशा में बाबू राधेलाल का रामभरोसे के प्रति मित्रता में छल, और राजा निरबंसिया में जगपती व चन्दा का परंपरागत पति-पत्नी का रिश्तों में जो परिवर्तन आता है। वहाँ भी एक गहर द्वन्द्व है।

नौकरीपेशा का राधेलाल, गर्मियों के दीन के वैद्य जी, मुर्दों की दुनिया का निसार, राजा निरबंसिया के जगपती व चन्दा आदि गहरे द्वन्द्व से गुजरने वाले पात्र है। और इसकी की त्रासदी यह है कि ये विचारों से परंपरावादी है लेकिन तेजी से बदलती युगीन परिस्थितियाँ इन्हे भी बदलने को मजबूर कर रही है। यह जबरदस्ती का बदलाव आधुनिकता व परंपरा के द्वन्द्व का एक ठोस आधार तैयार करता है। फिर इनके मानस का जो निर्माण होता है वह एक बदला हुआ मानस होता है। इस तरह से यह द्वन्द्व हर स्तर के व्यक्ति को अपने दायरे में लेकर उसे प्रभावित करती है। ये सभी पात्र मानसिक रूप से परंपराजीवी है। लेकिन आर्थिक संकट से जूझते हुए एक सहज जीवन पाने की कोशिश में लगे हुए है।

संवेदनशून्यता

आधुनिकता के बढ़ते प्रभाव ने व्यक्ति को संवेदनशून्य बनाया है। और बाद में यही संवेदनशून्यता व्यक्ति को लगातार परेशान भी करती रही है। इस संवेदनशून्यता के कारण एक तरफ वह अपने पुराने बोध के साठ जुड़ा रहना चाहता है लेकिन दूसरी तरफ वह आधुनिकता के बढ़ते प्रभाव में खुद को बहुत पिछड़ा हुआ महसूस कर ग्लानि से भरकर आधुनिकता की तरफ सहज रूप से झुकता भी चलता है।

कस्बे व शहर में आधुनिकता व परंपरा का अपना अलग संघर्ष है। चूंकि कमलेश्वर कस्बे व शहर के लेखक है तो इनके कहानियों में आधुनिकता व परंपरा का कस्बा व शहर में क्या स्वरूप है। उसका क्या प्रभाव है। कैसी स्थिति है। आदि भी हमें कमलेश्वर की कहानियों में दिखाई पड़ता है। कस्बों का शहरों की तरफ बढ़ाना अपने आप में एक घटना थी। और यह शहरों में बसा हुआ कस्बा आधुनिकता व परंपरा के द्वन्द्व में सबसे अधिक उलझा हुआ है। कारण यह है कि यह कस्बों से कत तो जाता है लेकिन शहर के साथ अपने आप की चला नहीं पाता है। क्योंकि एक तरफ उसका परंपरावादी मन है और एक तरफ तेजी से बदलती हुई दुनियाँ। जिसमे से किसी एक को भी साधना उसके लिए आसान नहीं है। और यह आसान न होना ही द्वन्द्व है। खोयी हुई दिशाएं, पराया शहर आदि कहानियाँ इसी कस्बे व शहर के द्वन्द्व से उपजी हुई कहानी है। परंपरगत नैतिकता व्यक्ति के भीतर से खत्म हो चुकी है। और इस खत्म होती नैतिकता से व्यक्ति के भीतर जो रिक्तता जन्मी है उसे वह भरना हो चाहत है पर भर नहीं पाता है। इसका उस पर गहरा दबाव भी है। हृषीकेश का अभिमत है "संयुक्त परिवारों में प्रत्येक व्यक्ति अधिकतम विकास नहीं कर सकता, न प्रत्येक व्यक्ति अधिकतम स्वतंत्रता का भोग कर सकता है। परिवार मर्यादा पर चलते हैं और अपनी संभावनाओं के प्रति जागरूक व्यक्ति केवल मर्यादा के लिए अपना जीवन एक घेरे में बंद नहीं कर सकता।"7

पैसे का महत्त्व

अद्योगिकरण, आधुनिकतावाद, पूंजीवाद, बाजारवाद, भूमंडलीकरण आदि के केंद्र में पैसा है। इन सारे वादों में पैसे को सबसे अधिक महत्त्व दिया जाता है। यानि इन सब वादों में पूंजी सबसे ऊपर है। और यही पूंजी हमारी बनी-बनाई संरचना को तोड़ती है। यह पूंजी हमारी चली आती हुई परम्पराओ को तोड़ती है। परंपराओं में विचलन पैदा करती है। यह पूंजी नयें संबंध, नयें मान-मूल्य विकसित करती है। यह पूंजी हमारे सामने नयें-नयें प्रश्न खड़ा करती है। हमारे अपने संबंध इस पूंजी से प्रभावित होते है। और इस पूंजी ने आदमी को और अधिक नकार, निकम्मा, सिद्ध कर दिया। आदमी की कीमत उसके आर्थिक हैसियत से तय होने लगी। पूंजी ही आदमी के ताकत व कमजोरी का पैमाना बनाता है। कमलेश्वर अपनी कुछ कहानियों में जैसे राजा निरबंसिया, गर्मियों के दिन आदि कहानियों में आदमी का विश्लेषण इसी पैसे के संदर्भ में करते है। तो देखने को मिलता है कि संबंध गौड़ है। और पैसा प्रधान है। पैसे का अभाव पति-पत्नी के रिश्ते को खत्म कर देता है। और इन खत्म रिश्तों में से नयें रिश्ते बनाते है। जिनके केंद्र में कहीं न कहीं पैसा होता है। यहाँ भी एक पल के लिए पुराने खयाल आते है लेकिन अगले ही पल वे टूटकर बिखर जाते है। यानि पकड़ने व छोड़ने का द्वन्द्व दिखाई देता है। यही वर्तमान मनुष्य के जीवन की सच्चाई है।

रूढ़ियाँ

लोक जीवन में रूढ़ियों का वैसा ही महत्त्व होता है जैसे बड़े लोगों के लिए सुख सुविधाओं का महत्त्व होता है। लोक जीवन में कुछ रूढ़िया सामाजिक विकृति का भी रूप ले लेती है। और ये विकृतियाँ भयानक पीड़ादायक होती है। यह किसी भी इंसान के मनोबल को तोड़ने से लेकर उसे गिराने तक का काम करती है। किसी को अपमानित करने से लेकर उसे उपेक्षित करने तक का काम रूढ़ियों के कारण होता आया है। सालीगरामव अन्नपूर्णा प्रेम विवाह करते है। लेकिन यह रूढ़ि ग्रस्त समाज उसे लगातार उपेक्षित व अपमानित करता है। और अन्नपूर्णा इस रूढ ग्रस्त समाज में जैसे कोई

कलंक हो जो दिख जाने मात्र से लोगों को अपवित्र कर देगी। यह भारतीय समाज की सच्चाई है और यह आज भी है। "सालीगराम के घराने में भी उसका स्वागत नहीं हुआ था। पता नहीं, कैसे औरत है...लड़कियों पर तो इसकी परछाई भी नहीं पदनी चाहिए।' सभी घरों में अन्नपूर्णा को लेकर घोर असंतोष था।"8

यह समाज इतना रूढ ग्रस्त समाज है कि उसे थोड़ा स भी वह नहीं पसंद है जो इनकी सोच के लीक से हटकर हो। इनके लीक से हटाना मतलब इनका अपमान होता है और फिर तब ये इस अपमान का बदला अपनी ही मानसिक विक्षिप्तता प्रकट करते हुए हमें दिखाते है। सालीगराम व अन्नपूर्णा के साथ भी यही होता है। "आर्य समाजी रीति से विवाह करने वाले सालीगराम इतवार को अन्नपूर्णा को लेकर आर्य समाज मंदिर जाते तो गलियों में सब खिड़की के पर्दे हिलने लगते...उनके पीछे वे तमाम आँखें झाकने लगती और फुसफुसाहट शुरू हो जाती।"9

लोक जीवन परंपरागत ढंग से सोचने वाला राग-रंग होता है। वह अपनी लकीर से हटकर सोचना पसंद नहीं करता है। और यह आज भी है। और लकीर से हटकर सोचने वालों को वह अपने ही लकीर से हटा देता है। जैसा की अन्नपूर्णा व सालीगराम के साथ होता है। "पर सालीगराम से शादी कर लेने का कलंक उसके माथे पर तब से आज तक लगा हुआ है। उसके लिए दोनों बस्तिया बीरान हो गई थी। तालगांव में रहना नहीं हो सकता था, और यहाँ कस्बे में रिश्तेदारों ने उसे अपना नहीं बनाया था।"10

मूल्यों का पतन आज के समय में माँ-बाप अपने घरों के जितना उपेक्षित हो रहे है। यह एक बड़ी समस्या है। रात औरत और गुनाह की वकीलन की तब यह बात बेमानी लगती है जब वे बच्चे के लिए अपना दुख बयां करती है। वकीलन कहती है कि "पराया बच्चा पराया ही होता है। चाहे जितना अंग लगाओ पर खून तो खून है।"11

रूढ़ियाँ सामान्यतः लोक जीवन में किसी न किसी रूप में सुरक्षित ही रहती है। और सबसे ज्यादा रूढ़ियाँ अगर कहीं होती है तो वह लोक जीवन ही है। वही अपने को अपनी लोक जीवन से लोक रीति-नीति, लोक धर्म आदि से अपने को जोड़ कर रखता है। रूढ़ियों से लोक का जुड़ाव कई बार अज्ञानता के कारण तो कई बार संवेदना के कारण यह होता है। लोक जीवन आज भी रूढ़ियों से मुक्त नहीं है और न ही वह पूरी तरह से मुक्त हो पायेगा और न ही वह पूरी तरह से मुक्त होना चाहता है। इन सबका हटाना मतलब लोक जीवन में गहरी निराश को ऊपजाना है।

बदले की भावना

लोक जीवन का अपना एक सामाजिक तानाबाना होता है। यह तानाबाना ही उसका सामाजिक कानून होता है। और यह लोक जीवन भी उतना ही खतरनाक होता है जितना की अन्य शासन सत्ताए होती है। सत्ताओं में बदले की भावना बड़ी प्रबल होती है। वहाँ एक की उन्नति दूसरे का सर दर्द बन जाती है। गोरख निसार एक ही कस्बे के रहने वाले है। लेकिन की स्थिति-परिस्थिति देखकर गोरख कहता है कि "देखना है, कब तक चलेगी निसार की नवाबी ! आर्डर हो गया है, अगले महीने से सरकारी मोटरे इस लाइन पर चलेंगी। और महीना खत्म होने में हफ्ता-भर तो रह गया है। तब देखना है, निसार की जालीदार बनियाइन, चरकटों की खातिब और बकरे की हरी अरहर।"12 क्या किसी का दुख किसी के खुशी का कारण हो सकता है। अगर हो सकता है तो फिर यह कैसा मनुष्य व मनुष्यता है।

कमाजोर को सतना बलशालियों का जैसे जन्मसिद्ध अधिकार है। अमीरों को, पूँजीपतियों को, राजनेताओं को, अफसरों को, और तमाम जिम्मेदार लोगों का भी यह अधिकार प्राप्त हो रखा है। गाव व कस्बा में अफसरशाही खूब चलती है। भोले-भाले लोग इनके खूब शिकार बनते है। किसी

को किसी भी तरह से कहीं उलझाया जा सकता है। इस प्रकार कमलेश्वर की कहानियों में लोक जीवन से जुड़ी हुई कुछ समस्याएं थी।

कमलेश्वर के कहानियों में प्रगतिशील चेतना

स्त्री संबंधी मान्यताओं का खंडन

कमलेश्वर अपने कहानियों में स्त्री संबंधी कई ऐसी मान्यताओं को खंडित करते है जो स्त्री जीवन के लिए कहीं न कहीं बाधक थे। या स्त्री जीवन के सहज गति में वे बाधक थे। कमलेश्वर इन बाधाओं को तोड़ने के पक्ष में खड़े होते है। और इसकी शुरुआत वे अपनी कहानी सफेद तितलियाँ से करते है। सफेद तितलियाँ कहानी स्त्री केंद्रित कहानी है। इस कहानी की पात्र सुमन है जो कई तरह की वर्जनाओ को तोड़ती हुई पति के मृत्यु के बाद घर-परिवार समाज के विरुद्ध जाकर दूसरी शादी कर लेती है। और खुशी-खुशी कहती है कि "और, मुझे अब वह प्राप्त हो गया था, जो मैं विवाहित जीवन में प्राप्त नहीं कर पाई थी।...मुझ विधवा पर रहम तो सब जताते हैं पर वे मेरी दूसरी शादी के पक्ष में नहीं हैं, यह मैं बहुत अच्छी तरह से जानती हूँ ! इसलिए अब मैं यहाँ से वेदप्रकाश के साथ किसी ऐसी जगह जा रही हूँ, जहां मैं माँ बन सकूँ, और अपनी नई जिंदगी जी सकूँ।"13

राजा निरबंसिया में चन्दा भी स्त्री प्रतिमानों को तोड़ने वाली स्त्री पात्र है। देवा की माँ कहानी में देवा की माँ भी सहृदय स्त्री के साथ परंपराओं को दृढ़ता से स्वीकार करने के साथ प्रगतिशील विचारों वाली महिला है। जो लिखा नहीं जाता कहानी भी एक प्रगतिशील विचारों वाली सूदर्शना की कहानी है। नीली झील कहानी की पारबती ये सभी स्त्रियाँ कई मान्यताओं का खंडन करती है।

परंपरा भी एक मूल्य है और आधुनिकता भी एक मूल्य है। दोनों की अपनी सीमाएं है। दोनों की अपनी विशेषताएं है। दोनों की अपनी विशिष्टता है। समय के साथ ही समाज अपने द्वारा बनाए

गए बहुत सारे विचारों को तोड़ते छोड़ते जीवन पथ पर आगे बढ़ता चलता है और बहुत कुछ को बचाए रखना चाहता है। लेकिन बदलते हुए समय की आंधी में वही बच पाता है जो मनुष्य जीवन व समाज को सार्थक लगता है। आधुनिकता का जन्म ही जहां नए विचारों से होता है वही परंपरा अपने पुराने का आग्रह करती है और उसे अपने पुराने पर यकीन ज्यादा और नए पर भरोसा कम होता है। यही उसके टकराहट का बिन्दु है।

कमलेश्वर की प्रारम्भिक कहानियां परम्परागत भावबोध को लेकर लिखी गयी हैं। अर्थात उन पर प्रेमचन्द्रयुगीन कहानी का काफी प्रभाव दिखायी देता है। 'राजा निरबंसिया' कहानी संग्रह में कहानियों की दो प्रवृतियां स्पष्ट रूप से दिखायी देती हैं। कुछ कहानियां स्थापित नैतिकताबोध और परम्परागत भावबोध को लेकर लिखी गयी हैं और कुछ कहानियां परिवर्तित बोध व बदली हुई यथार्थ दृष्टि को व्यक्त करती हैं। देवा की माँ, पानी की तस्वीर, गाय की चोरी और कस्बे के आदमी ये कहानियाँ प्रेमचन्द्रयुगीन परम्परा की कहानियाँ हैं। इन कहानियों में मानवतावादी मूल्यों और आदर्शों की स्थापना का आग्रह हैं। जीवन के महान मूल्यों के प्रति लेखक की आस्था इन कहानियों का कथ्य हैं। परम्परागत पत्नी धर्म मे आस्था, निश्चित आदर्शो के प्रति श्रद्धा, दूसरों के लिए त्याग और हानि रहने की तत्परता, परलोक सुधारने की चिंता तथा प्राणी मात्र के प्रति स्नेह यह परम्परा का आदर्श हैं जिसे कमलेश्वर उतार नही पाये हैं किंतु इन्ही के समानांतर इन्ही कहानियों में वे इनके प्रति बदले हुए दृष्टिकोण को भी रखते चलते है जैसे देवा की माँ अपने पत्नी रूप में होते हुए भी अपने अधिकारों के प्रति सजग हैं। कस्बे के आदमी में शिवराज के छोटे महाराज के प्रति व्यवहार बदलती स्थितियों का सूचक हैं।

कमलेश्वर की कहानियाँ बदली हुई मनःस्थिति की कहानियाँ है। मधुकर ने लिखा है कि “मैंने कमलेश्वर की कहानियों को बदली हुई और बदलती हुई मनःस्थिति की कहानियाँ कहा है। यह बदलना जहां निरंतर विकास का प्रतीक है, वहाँ बदलाव एक रूपांतरण का। और कमलेश्वर की

कहानियाँ विकास और रूपांतरण दोनों को साथ-साथ समेटते चलते की कोशिशें हैं। शुरू से लेकर अब तक उनकी कहानियों का जायजा लिया जाए तो यह बात साफ हो सकती है कि उनका कथ्य और उनकी अभिव्यक्ति कभी एक सी नहीं रही। उनमें लगातार परिवर्तन होता चला है। यह निरंतर गतिशीलता एक ओर जहां लेखक की रचनात्मक जीवंतता का सबूत है वहीं आधुनिकता के संतरण की शर्त भी है।"14

कमलेश्वर के लेखन में शहर व कस्बा का जबरदस्त द्वन्द्व है। उनका झुकाव कस्बे की संघर्षों पर टिकी हुई है, वहाँ के आत्मीय संबंधों पर उनकी नजर अश्वत है जहां बिना रिश्तों के रिश्ते थे, महरी उसकी चाची कहलाती थी, पोस्टमैन उसका ताऊ हो जाता था या सारे गाँव और कस्बे में उसे हर चेहरे पर परिचय और आत्मीयता की इबारत मिलती थी तो शहर में संबंधों के बदलते समीकरण कमलेश्वर को तंग करते है। मधुकर "कमलेश्वर की कहानियाँ अनुभव के दायरे में क्रमशः आती हुई जिंदगी से बदलती और विकसित होती रही है। उन्हे पूर्ण होते रहने की प्रक्रियाँ की कहानियाँ कहाँ जाये तो बेजा न होगा।...गाँव से कस्बा और कस्बे से नगर-महानगर की यात्रा है। ये गाँव कस्बा और नगर-महानगर जिंदगी के लोकेल और पैटर्न ही नहीं हैं, वे बोध, और संस्कार और मानसिकता के प्रतीक भी हैं। यों इन कहानियों को आधुनिकता की यात्रा से भी जोड़ा जा सकता है। यह यात्रा जितनी ऊपरी है, उतनी ही भीतरी भी है, यानि जीवन के रहन-सहन, तौर-तरीकों और वातावरण और परिवेश की जितनी है, उतनी ही, बल्कि उससे ज्यादा ही संस्करों, मानसिकता और वृत्तियों की भी है।"15

आधुनिकता का सवाल मिथकीय परंपरा से अलग वैज्ञानिक परंपरा के आगाज व उसकी स्थापना से जुड़ा सवाल है। आधुनिकता कोई खास वस्तु नहीं है कि उसे हम पकड़ कर खड़ा कर यह कह सके की यही आधुनिकता है। मनुष्य समाज जैसे एक निरंतर समाज है। ठीक वैसे ही परिवर्तन भी निरंतर है और आधुनिकता इस निरन्तरता की एक निरंतर प्रक्रिया है। यह समाज निरंतर

आधुनिक समाज अपने प्रारम्भिक समय से ही है। इस परिवर्तन को हम अलग-अलग समय पर अलग-अलग नाम दिए है। इसी तरह आधुनिकता भी समाज के निरंतर परिवर्तन की प्रक्रिया का एक पड़ाव है। इस पड़ाव में हमारे पास टेक्नॉलाजी आती है, शिक्षा का अत्यधिक प्रचार-प्रसार होता है, अद्योगिकरण होता है, नगरीकरण होता है, विश्वभर में लोकतंत्र स्थापित होता है, राजतन्त्र से विश्व लोकतंत्र की ओर बढ़ता है, स्त्री-पुरुष में समानता की बात की जाती है, शोषण-व शोषक की बात की जाती है, गरीब, किसान, मजदूरों की बात की जाती है, संसाधनों का विकास होता है, पूरा विश्व एक साथ मिलने व चलाने की कोशिश करता है, हम विज्ञान व टेक्नॉलाजी के द्वारा चाँद पर जाते है, नयी-नयी खोज करते है, असंभव कार्य को संभव कर दिखते है, यह सब चकाचौंध ही आधुनिकता है। इसे ही आधुनिकता कहाँ गया। इन सब के बीच हम अपने पुरानेपन से दूर हुए और समय के साथ आए परिवर्तन को अपनाते गए। यहाँ जीवन के नए मूल्य विकसित होते है। नए संबंध विकसित होते है नयी व्यवस्था विकसित होती है। यानी समाज में जो नयापन आता है इसे ही आधुनिकता के नाम से संबोधित किया गया, आधुनिकता के नाम से पुकारा गया। इसे हम मनुष्य जीवन के क्रमिक विकास का एक पड़ाव भी कहेगे। यह विकास क्रमिक और अधिक विकसित होता जाएगा। इस विकास में ही मनुष्य के पतन के बीज छुपे हुए है। यह मनुष्य के पतन का गर्भ भी है। इसी गर्भ में मनुष्य के पतन का बीज छुपा हुआ है। रोलों मेय का यह कथन एकदम सही है कि "हमारी संस्कृति में चिंता के एक भरपूर फैलाव का निश्चय ही एक तथ्यपरक कारण यह है कि हम एक ऐसे समय में रह रहे हैं, जबकि समूची सामाजिक मान्यताएं अपने परिवर्तन में हैं और (हमारे बीच) एक विश्व मर रहा है और दूसरा नया विश्व अभी जन्म नहीं ले सका।"16

समाज में कुछ ऐसे भी परिवर्तन आए है। जिन्हे न तो हम आधुनिकता कह सकते है और न ही हम उन्हे परंपरा कह सकते है। इन दोनों के मध्य कुछ चीजों का पतन हुआ है। जो न आधुनिकता के अंतर्गत है न परंपरा के अंतर्गत। इस पतनशील चीजों व विचारों का कमलेश्वर के यहाँ बड़ी

मोटी परत है। कमलेश्वर के यहाँ पतनशील चीजें ज्यादा है। और यह पतन विडंबनापूर्ण है। जैसे वे अपनी कहानी आधुनिक दिन आधुनिक रातें में कहते है कि "लोग दूसरे कमरे की ओर कदम बढ़ा रहे हैं। सचमुच पार्टी का इंतजाम है और सबसे प्रमुख वे कागजी फूलों के गुलदस्ते जो बीच-बीच में रखे हैन। वीरेश बड़बड़ाता हुआ नीचे की ओर जा रहा है, "शोक सभा है या चाय पार्टी !"17 इस तरह की पतनशीलता का चित्रण बड़े ही मजबूती व विडंबना के साथ कमलेश्वर दिल्ली में एक मौत कहानी में भी करते है। वहाँ भी लोग दाह संस्कार में ऐसे शिरकत कर रहे है जैसे किसी शादी समारोह में जा रहे है। यह न तो आधुनिकता है और न ही यह परंपरा ही है। यह पतन है। यह बदली हुई संवेदनाए है। जो न तो आधुनिक है न परंपरागत है। अतुलवीर अरोड़ा का यह अभिमत सत्य ही है कि "आधुनिकता का प्रश्न मनुष्य-बुद्धि और तकनीकी-विज्ञान के आपसी द्वन्द्व का प्रश्न है जो पिछले सभी प्रश्नों से अधिक महत्त्वपूर्ण भी है।"18

भारतीय समाज की संरचना में ही अंतर्विरोध है। यह समाज दो तरीके से सोचने वाला समाज है। एक दो बहुत प्रगतिशील होकर भी परंपरावादी होना और दूसरा परंपरावादी होकर भी प्रगतिशील होना। समाज की इस संरचना के कारण ही आधुनिकता व परंपरा का द्वन्द्व इसके भीतर बना हुआ है। विष्णुकान्त शास्त्री "भारतीय मुद्रा का अवमूल्यन तो बाद में हुआ, भारतीय संस्कृति का अवमूल्यन स्वतंत्रता के बाद तुरंत ही हो गया। भारतीय संस्कृति, स्वीकरण और विकास के स्थान पर उन्हे पिछड़ा प्रतिगामी करार देकर उनके प्रति अश्रद्धा की भावना फैलायी गई।"19

आधुनिकता के नाम पर क्लब, काफी हाउस, रेस्तरा और डिस्को की जो तथाकथित संस्कृति जन्म ले चुकी हैं, उच्छृंखलता, फैशन मध्ययान, यौनमुक्तता आदि उसके अनिवार्य अंग हैं। कहीं-कहीं रूढ़ियों अंधविश्वास को ही संस्कृति मान लेते है। और कहीं-कहीं अतिवादिता को ही आधुनिकता। संस्कृति का अर्थ का समग्र जीवन का संस्कार दर्शन। इसमे रस रुचि, शिलाचार, व्यवहार आदि सभी कुछ समाहित हो जाते हैं। और इन सारे विषय खंडों की पृष्ठभूमि में निहित संस्कार परंपरा

का ही नाम संस्कृति है। "आधुनिकता की अद्भावना-भूमि मूल्य-द्वन्द्व की प्रक्रिया की भूमि है। जिस विकास या प्रगति की कड़ियाँ इस भूमि पर उभरती हैं, उन्हे लेकर किस प्रकार की आलोचना करना संगत हो सकता है, इसके लिए दर्शन की विज्ञान-संगत भूमिका से जोड़ना होगा।"20

कमलेश्वर के कहानियों में अपने समकालीन साहित्य व समाज की अंतरविरोध भी व्याप्त है। कमलेश्वर जिन कथ्यों की बात अपने कहानियों में करते है। वे कथ्य स्वयं समाज के विरोधाभास से उपजे हुए कथ्य है। और यह विरोधाभास व्यक्ति के भीतर व बाहर दोनों स्तरों पर मौजूद है। यह बाहर व भीतर का द्वन्द्व आधुनिकता व परंपरा का भी द्वन्द्व निर्मित करता है। असल में समाज में आधुनिकता और परंपरा का द्वन्द्व व्यक्ति के बाहर व भीतर का ही द्वन्द्व है। यह समाज का ही द्वन्द्व है।

कमलेश्वर का दृष्टिकोण आधुनिकता के सकारात्मक पक्ष के प्रति बड़ा ही समर्थित दृष्टिकोण था। और ऐसा ही दृष्टिकोण उनका परंपरा के प्रति था। परंपरा में जो सकारात्मक है, सुंदर है, सुदृढ़ है, मनुष्यता के निर्माण में जिन तत्त्वों का योगदान है कमलेश्वर उसके प्रति विनम्र है। उदार है। उसके स्वीकार के पक्ष में है। और जो मृत हो गया है उसे वे सहज ही अस्वीकार करते है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण है नयी कहानी का आरंभ। नयी कहानी का आरंभ ही स्थिर हो चुके विचारों के विरोध के साथ होता है। और नयें विचारों के साथ उसकी शुरुआत होती है। और ये नयें विचार कहीं आसमान से नहीं टपक रहे थे बल्कि ये नयें विचार परंपरा से ही प्राप्त होते है। जिस पर कमलेश्वर जी स्वयं कहते है कि "कबीर का विद्रोह, सामाजिक न्याय की मांग और बंधुत्व का आग्रह, भारतेन्दु की भारतीयता और आजादी का हक, प्रसाद की मानवतावादी मूल्यों के पुनर्निर्धारण की आकांक्षा और उत्तरवर्ती प्रेमचंद द्वारा यथार्थ का ग्रहण और मानवीय संकट की व्याख्या-यह था वह क्रम, जो नई विचार-संपदा की विरासत थी।" परंपरा के प्रति कमलेश्वर का दृष्टिकोण यहीं है कि जो तमाम उठा-पटक जीवन के झंझावातों के बावजूद तमाम अवरोधों के बाद भी जीवन में प्रासंगिक

है। सरतःक है वह कितनी भी पुरानी परंपरा हो वह जीवन के लिए सार्थक है। वह जीवन के लिए अनिवार्य है। और यहीं कारण है कि वे साहित्य कि परंपरा में अपने उन पूर्वज कवियों को रेखांकित करते है जो हजारों साल से जीवन के लिए समाज के लिए जरूरी बने हुए चले आ रहे है।"21

कमलेश्वर के समकालीन साहित्य में आधुनिकता या नयें विचारों को किस रूप में देखा जाता था। उसे बयां करते हुए कमलेश्वर कहते है कि "जी कुछ बदल गया या बदल रहा था, उसके प्रति हमारे तत्कालीन शीर्षस्थ लेखकों की भंगिमा में एक तरह का कड़ुवा व्यंग्य था। उनके लिए जीवन का प्रत्येक नया पहलू जिज्ञासा का विषय न होकर हिकारत का कारण बन गया था। जिंदगी में आया हुआ परिवर्तन उन्हे रुच नहीं रहा था और वे उसकी ओर प्रश्नवाचक मुद्रा में नहीं बल्कि नकार की मुद्रा में खड़े थे।"22

आधुनिकता व परंपरा दो भिन्न विचार सरणियाँ है। दो भिन्न विचार पद्धतियाँ है। जिसमें आधुनिकता का जोर ज्ञान-विज्ञान के साथ नए विचारों नयी तकनीक के साथ तार्किकता पर आधारित व्ययस्था है। जबकि परंपरा का अभिप्राय प्राचीन समय से हमारे जीवन मे चली आ रही आती हुई जीवन के संदर्भ में कमलेश्वर जी के विचार मूल्य आधारित विचार है। उनके लिए आधुनिकता हो या परंपरा वह वहीं तक स्वीकार्य है जहां तक वह मनुष्य के लिए मूल्यवान है। समाज के लिए मूल्यवान है। मनुष्य व समाज के बाहर वे किसी चीज का मूल्य नहीं अकाते है। यही कारण है कि मनुष्य व समाज के बाहर की चाहें आधुनिकता हो या परंपरा कमलेश्वर के लिए उसका कोई मूल्य नहीं है। जो मनुष्य के लिए सार्थक नहीं हो सकता, जो समाज के लिए महत्त्वपूर्ण नहीं हो सकता आज का मनुष्य उसे अपने सर पर ढ़ो नहीं सकता। समाज उसे झटक कर फेंक देता है। वह चाहे आधुनिकता हो या परंपरा हो। इस दृष्टि से कमलेश्वर के लेखन में आधुनिकता व परंपरा का द्वन्द्व तो है। और उसका आधार मूल्य है। मूल्यों का परिवर्तन किसी भी समाज के लिए सबसे बड़ा परिवर्तन होता है। और लगातार बदलते हुए समय में मूल्यों को संरक्षित कर

पाना या उन्हे संरक्षित करने के लिए अड़े रहना अपने आप में चुनौती है। पुराने मूल्यों का संरक्षण और बदलते हुए समाज में निर्मित होते हुए नए मूल्यों का सामंजस्य बैठना ही आधुनिकता व परंपरा का द्वन्द्व है। जीवन जैसे-जैसे आगे बढ़ता जा रहा है वैसे-वैसे कठिन होता जा रहा है। यह सरलता से कठिनता का जो मार्ग है। यह भी आधुनिकता व परंपरा के द्वन्द्व का एक मजबूत आधार है। जीवन जैसे-जैसे आगे बढ़ रहा है वैसे-वैसे इसके सूत्र बदल रहे है। इन बदलते सूत्रों में भी द्वन्द्व है। कमलेश्वर किसी भी तरह के अतिवाद से बचते है। क्योंकि अतिवाद किसी भी चीज के सौन्दर्य को क्षत-विक्षत कर देता है। इसी तरह आधुनिकता का अतिशय आग्रह या परंपरा का अतिशय निषेध यह दोनों अतिशयता की श्रेणी में आता है। इस अतिशयता का भी द्वन्द्व हमे कमलेश्वर के यहाँ मिलता है।

कमलेश्वर की कहानियों में आधुनिकता व परंपरा का द्वन्द्व कई दृष्टियों से उभरकर सामने आता है। लेकिन इस द्वन्द्व में कमलेश्वर कहीं भी संकीर्ण नहीं होते है। एक लेखक जो समाज को एक दिशा देता है। समाज को विचार देता है। उसे अपने समाज के अच्छे-बुरे की चिंता होरी है। वह एक स्वस्थ्य समाज के निर्माण की पक्षधरता करता है। तब वह किसी भी तरह के अतिवादों से बचता है। और तमाम अवरोधों के बावजूद वह अपने लेखन में एक संतुलन की दरकार करता है। कमलेश्वर भी यही करते है। समाज उस समय भी और आज भी कई तरह के अवरोधों से बधा हुआ है। लेकिन इन अवरोधों को न तो एक झटके में तोड़ा जा सकता है और न ही एक झटके में इनसे अलग हुआ जा सकता है। बल्कि इनके साथ हमे संतुलन बना कर चलना पड़ता है। और किसी बी द्वन्द्व की स्थिति में यही किया जाता रहा है। कमलेश्वर भी यह करते है।

संदर्भ ग्रंथ

1 डॉ. मिनी जार्ज कमलेश्वर का कथा साहित्य:समकालीन समस्याओं का जीवंत आलेख अमन प्रकाशन संस्करण 2013 पृ.33

2 डॉ.अनुज सेंगर रविन्द्र कालिया के ए. बी. सी.डी. उपन्यास में आधुनिक चेतना निखिल पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रकाशन संस्करण 2016 पृ.21

3 डॉ.अनुज सेंगर रविन्द्र कालिया के ए. बी. सी.डी. उपन्यास में आधुनिक चेतना निखिल पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रकाशन संस्करण 2016 पृ.251

4 कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.72

5 कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.100

6 माधुरी शाह कमलेश्वर का कथा साहित्य प्रकाशन साहित्य रत्नालय प्रकाशन संस्करण 1982 पृ.7

7 डॉ.बादमसिंह रावत सठोत्तरी हिन्दी कविता की वस्तु चेतना गिरीनार प्रकाशन संस्करण 1984 पृ.33

8 कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.170

9 कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.170

10 कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.170

11 कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.95

12 कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.202

13 कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.66

14 संपादक मधुकर सिंह कमलेश्वर शब्दकार दिल्ली प्रकाशन संस्करण प्रथम 1977 पृ.106

15 संपादक मधुकर सिंह कमलेश्वर शब्दकार दिल्ली प्रकाशन संस्करण प्रथम 1977 पृ.107

16 अतुलवीर अरोड़ा आधुनिकता के संदर्भ में आज का हिन्दी उपन्यास प्रकाशक बालकृष्ण, एम.ए. पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ संस्करण 1974 पृ.10

17 कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.34

18 अतुलवीर अरोड़ा आधुनिकता के संदर्भ में आज का हिन्दी उपन्यास प्रकाशक बालकृष्ण, एम.ए. पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ संस्करण 1974 पृ.13

19 डॉ.बादमसिंह रावत सठोत्तरी हिन्दी कविता की वस्तु चेतना गिरीनार प्रकाशन संस्करण 1984 पृ.35

20 अतुलवीर अरोड़ा आधुनिकता के संदर्भ में आज का हिन्दी उपन्यास प्रकाशक बालकृष्ण, एम.ए. पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ संस्करण 1974 पृ.18

21 कमलेश्वर नयी कहानी की भूमिका राजकमल प्रकाशन संस्करण 2015 पृ.13

22 कमलेश्वर नयी कहानी की भूमिका राजकमल प्रकाशन संस्करण 2015 पृ.22